विशेष रूप से कमजोर जनजाति समूहों में शासन द्वारा संचालित विकास के काय्रकमो के प्रति जागरूकता : एक अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के कबीरधाम जिले के विशेष संदर्भ में

अंजली यादव[1] डॉ. एस. एल. गजपाल[2] डॉ राधना खरे [3]

[1]शोधार्थी : समाजशास्त्र एंव समाज कार्य अध्ययनशाला

[2]एसोसिएट प्रोफेसर एंव विभागाध्यक्ष समाजाशास्त्र एंव समाज कार्य अध्ययनशालापं. रविशंकर विश्वविद्यालय, रायपुर(छ.ग.)

[3]प्रोफेसर एंव विभागाध्यक्ष समाजाशास्त्र शा. ई. वी. पी. जी महाविद्यालय कोरबा(छ.ग.)

Email – *anjaliyadav1051992@gmail.com, gajpal14@gmail.com, kharesadhna@gmail.com*

Abstract –प्रस्तुत शोध अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य की विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा पर आधारित है। शोध अध्ययन कबीरधाम जिले के बोड़ला विकासखण्ड के 7 ग्रामों पर केन्द्रित है। अध्ययनगत क्षेत्र के 277 परिवारो पर अध्ययन किया गया है। शोध अध्ययन मे तथ्य संकलन हेतू प्राथमिक तथ्य संकलन साक्षात्कार अनुसूची एंव अवलोकन प्रविधि के द्वारा किया गया है। अध्ययन के माध्यम से इस तथ्य को जानने का प्रयास किया गया है कि वैश्विक परिदृश्य में आदिम जनजाति बैगा समूहों में शासन द्वारा संचालित जनसंख्या गिरावट को रोकने हेतु किये गये सरकारी व गैर सरकारी प्रयासो के प्रति जागरूकता के प्रति चेतना को जानने का प्रयास किया गया है। अध्ययन सें यह ज्ञात हुआ है कि बैगाओं की जनसंख्या लगातार विगत वर्षा में घटती जा रही है। शासन ने बैगाओं के जीवन स्तर को सुधारने हेतु अनेक योजनाओं को संचालित किया है जिसके फलस्वरूप भी बैगा वर्तमान समय मे भी सरकार द्वारा अनेक रोजगार सम्बंधी स्वास्थ्य सम्बंधी, शिक्षा सम्बंधी योजनाओं से अनभिज्ञ पाये गये है। ऐसे में बैगाओं की जनसंख्या मे बढ़ती हुयी गिरावट एक गंभीर चिंतनीय विषय है।

महत्वपूर्ण शब्द – बैगा जनजाति, जनसंख्या गिरावट, शासन द्वारा संचालित योजनाएं

बैगा जनजातियों में जनसंख्या गिरावट को रोकने हेतु किये गये सरकारी व गैर–सरकारी प्रयत्नो का मूल्यांकन –

बैगा जनजातियों में जनसंख्या गिरावट गंभीर समस्या है। बैगाओं को भारत सरकार द्वारा संरक्षित जनजातियों में शामिल किया गया है, बैगा अध्ययनगत क्षेत्र में 5 विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक है। भारत के राष्ट्रपति के द्वारा बैगा जनजातिय को गोद में लीया गया है। बैगाओं के जीवन –पद्धति, कला संस्कृति व सांस्कृतिक नियमो तथा प्रथाओ विविध विषयो पर अनेक शोध कार्य हुए है। जिससे बैगा समुदाय के जीवन शैली एंव परम्परा के बारे में हम सभी परिचित हुए है एंव बैगाओं के वैद्य परम्परा एंव समृद्धि से भी अवगत है। बैगा वर्तमान में भी अपनी मूलभूत आवश्यकता की पूर्ति के लिए अपनी जान जोखिम में डालते है। बैगा अपने आप में सर्वाधिक संस्कृति सम्पन्न जनजातिय है। सरकार द्वारा बैगाओं के विकास के लिए अनेक योजनाएं बनाया गया जिससे कि बैगा समुदाय को सरकारी योजनाओं का लाभ मिल सके। सभी अनुसूचित जनजातियों के बहुमुखी विकास के लिए सरकार ने शिक्षा सम्बंधी, स्वास्थ्य सम्बंधी एंव रोजगार सम्बंधी अनेक योजनाएं बनायी है, जिससे बैगाओं को शिक्षा व रोजगार के अवसर प्राप्त हो सके। सरकार बैगाओं के निम्न स्वास्थ्य स्तर देखते हुए बैगाओं के स्वास्थ्य स्तर को लेकर कई योजनाएं बनायी गयी है। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने हेतु रोजगार सम्बंधी योजनाएं बनायी गयी है। अध्ययनगत क्षेत्र रेंगाखार नक्सल प्रभावित क्षेत्र है जिसके लिए सरकार अनेक योजनाएं संचालित किया है किन्तु फिर भी आदिम जनजाति बैगा समूहों मे कोई विशेष परिवर्तन दिखाई नही देता है।

सिंह (1989) की मान्यता है कि विकास की विभिन्न योजनाओं ने आदिवासी जनजीवन को प्रभावित किया है, जिनके फलस्वरूप धनुष बाण धारण करने वाला आदिवासी सभ्यता के नवीन परिवेश से परिचित हुआ है। आर्थिक सुरक्षा पर्यावरण की सुरक्षा लघु स्तर पर उद्योगो की स्थापना द्वारा जनजातिय विकास की व्रीवता को बढाये जाने की सम्भावना विद्यमान है।

नगला (1989) ने सामाजिक दृष्टी से विकास का अर्थ समझाते हुए बताया कि जनजातियों के विकास हेतु उनके दृष्टिकोण में इस प्रकार परिवर्तन लाना होगा कि वे नए कौशल व्यवहार एंव जीवन विधि को अपनाने को तैयार हो तथा उनके संस्कृतिक ढाचे में भी इसी प्रकार परिवर्तन करना होगा कि योजनाओं का लाभ उठाकर वो अपना जीवन स्तर को ऊँचा उठा सके। उन्होने जनजाति विकास के विभिन्न कार्यकम के मार्ग में आने वाली बाधाओं का उल्लेख करते हुए कार्यकमो की सफलता हेतु जनजाति जीवन के सांस्कृतिक मूल्यो एंव भावनाओ को उनके निकट सम्पर्क द्वारा समझ कर कार्यकम बनाये जाने का सुझाव दिया।

रायवर्मन (1992) ने आदिवासी विकास के उचित मूल्यांकन एंव विकास नीति की सही व्यूह रचना के लिए आवश्यक विषयो जैसे वितरण व्यवस्था, व्यवसायिक प्रतिमान, शिक्षा एंव शहरीकरण आदि पर विचार व्यक्त किये है। उनके अनुसार विकास की नवीन नीतियां आदिवासी विकास की सामाजिक ,आर्थिक, सांस्कृतिक स्थिति से अनभिज्ञ रहते हुए बनाये जाने के परिणाम स्परूप आविदवासी अर्थव्यवस्था एंव सामाजिक जीवन पर उनका विपरित प्रभाव पड़ रहा है।

DOI: 10.52228/JRUA.2021-27-1-5

PRINCIPAL,
GOVT. ENGINEER VISHWESARAIYA
P.G. COLLEGE KORBA (C. G.)

GOVT. E.V.P.G. COLLEGE KORBA